कितना ख़ूबसूरत है यह सफ़र कविता का,
जैसे लफ़्ज़ों का पुल हो मेरे आपके दरमियाँ...

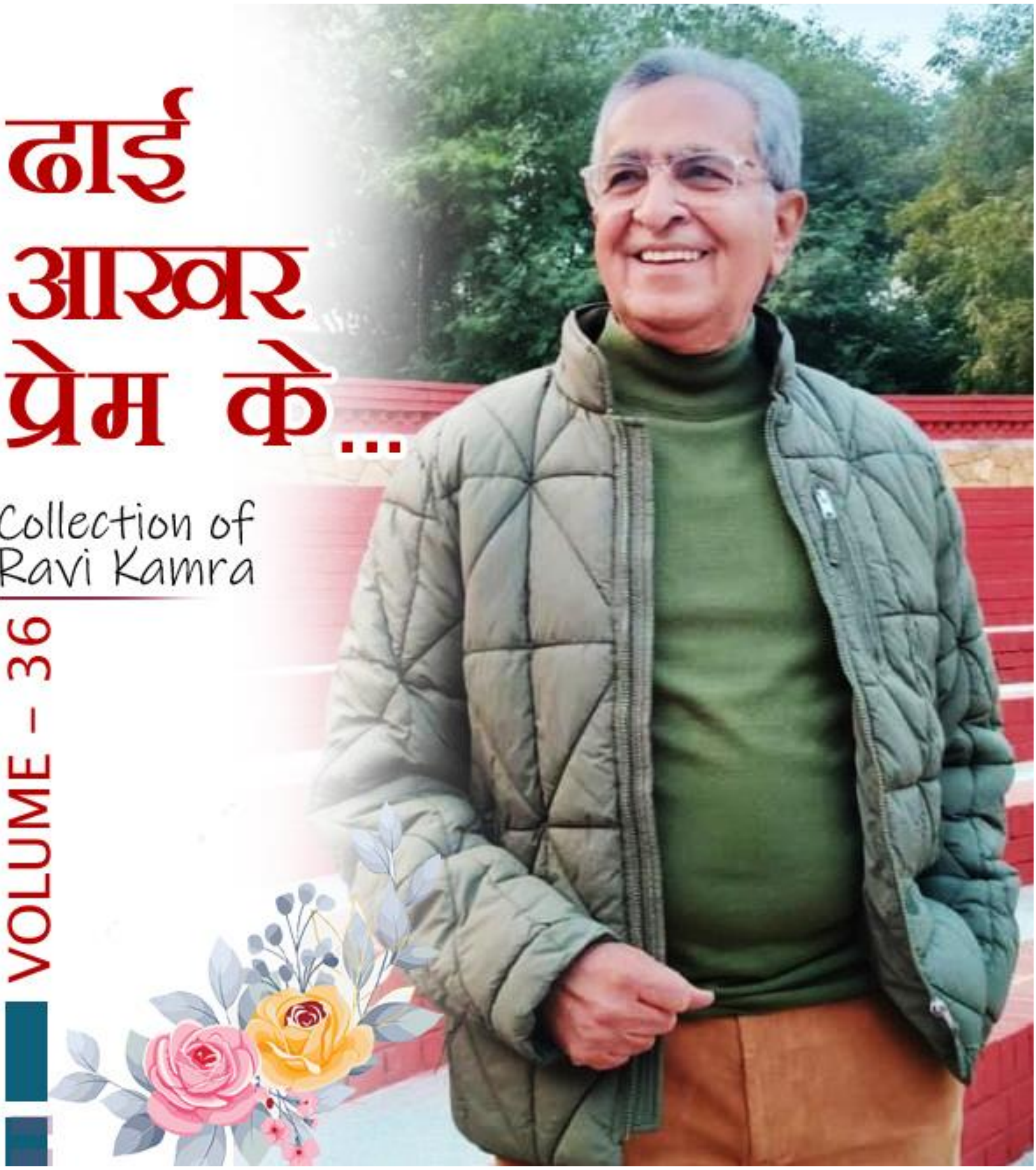

नए साल पर दुआ ......

"जीवन में खिला रहे बसंत
मन में खुशियाँ रहें अनंत "

ज्यादा ख्वाहिशें नहीं है
अगला साल पिछले साल से बेहतर हो
इतना काफी है

कितना ख़ूबसूरत है यह सफ़र कविता का,
जैसे लफ़्ज़ों का
पुल हो मेरे आपके दरमियाँ..

इक अजीब सी बेताबी रहती है तुम्हारे बिना
हम रह भी लेते हैं , और रहा भी नहीं जाता

इक बार वो कहता तो थोडा और रुक जाते
बिन कहे जिसके उम्रें गुजारी थीं

कभी ये दुआ कि
उसे मिल जायें सारे जहां की खुशियाँ
कभी ये डर
कि वो खुश मेरे बिना तो नहीं !
कभी ये आरज़ू
कि वो जो मांगे मिल जाये उसे
कभी ये वसवसा
कि उसने मेरे सिवा कुछ माँगा तो नहीं !

हमने चलीं सारी यहाँ प्यार की चालें
ये खेल तब हारे जब उसकी बारी थी

लहू के थे जो रिश्ते उन्हें छोड़ के आ गये
सुकून आँखों के सामने था मुंह मोड़ के आ गये
और खजाने लुट रहे थे माँ बाप की छाँव में
हम कोडियों की खातिर घर छोड़ के आ गये

प्रेम के बीज बोये नहीं जाते
वे स्वत ही हृदय की नम सतह पाकर
कभी भी, कहीं भी,

किसी क्षण
प्रेम बनकर अंकुरित हो उठते हैं

एक दशक प्रतीत होने लगता है सदी सा
एक माह लगता है जैसे बरस
एक हफ्ता महीने सा लगता है
और एक दिन भी फिर महीना
लगने लगता है
कुछ इस तरह बिगड़ता है
कैलेंडर
तेरी प्रतीक्षा में !!!!!

कुछ लोग जिंदगी होते हैं
मगर जिंदगी में नहीं होते

ताल्लुक रखना है तो
झगडा कैसा
ताल्लुक रखना ही नहीं तो
झगडा कैसा

मिश्री की डली
जब मिले तब भली

इत्तिफाक अपनी जगह ,खुश किस्मती अपनी जगह
खुद बनाता है जहाँ में आदमी अपनी जगह

ढूंढा सब जहां में, पाया तेरा पता नहीं,
जब पता तेरा लगा, अब पता मेरा नहीं,

मुझे मुहब्बत लग गई हैं....
नज़र की तरह......❤.

चांदी उगने लगी है बालों में
उम्र तुम पे हसीं लगती है।

एक नज़र देख के सौ नुक्स निकाले मुझमें,
फिर भी मैं ख़ुश हूँ कि मुझे गौर से देखा उसने.

जिसने मेरी हँसी में भी शिकन तलाश ली,,
बारीकियां तो देखिये,उसकी निगाह की।।

कर्ज़ होता तो उतार भी देते...
कमबख़्त "इश्क़" था चढ़ा रहा

मिट्टी कुछ भी नहीं है इसलिए “कुछ” भी हो जाती है
अंधेरे में दिया बन जाएगी और प्यास में घड़ा

“बच्चे को देखकर खिलौना हो जाती है मिट्टी...”

मुझे तो बस ख़ुशी कमानी है

बड़ी मेहनत की है मैंने ख़ुशी कमाने में

और मेहनत करते रहना है

कभी भी इस खाते में नुक्सान नहीं होने देना है

इस मुनाफे में कोई घाटा नहीं चाहिए

मुन्तज़िर मैं ही नहीं रहता किसी आहट का
कान दरवाज़े पर उसके भी लगे रहते हैं

ज़िंदगी कम पढ़े परदेसी का ख़त है 'इबरत'
ये किसी तरह न पढ़ा जाए न समझा जाए

लम्हों को यादें नहीं....
यादगार बनाया जाता है

एक मनपसंद शख्श की कमी
दुनिया के सारे लोग पूरी नहीं कर सकते

इक आदत सी है हमें
तुम्हे याद करने की

हल्के लोग
उड़ते बहुत हैं

तुझे पाना ज़रूरी नहीं
तेरा होना ज़रूरी है

तू ही बता कैसे लिखूं मैं
थोड़े से शब्दों में बहुत सारा प्यार

खींच लाती है हमें तेरी मुहब्बत वर्ना
आख़िरी बार कई बार मिले हैं तुझ से
अब्बास ताबिश

___तलाश मेरी ख़त्म होती नहीं ,,
मैं हर रोज़ ख़ुद में ख़ुद को ढूँढती हूँ..!!

आईने बेचता था कोई पूछता न था
जबसे मुखौटे रख लिए धंधा चमक गया

हमसफ़र चाहिए हजूम नहीं
इक मुसाफिर भी काफिला है मुझे
तू मुहब्बत से कोई चाल तो चल
हार जाने का हौसला है--------------फ़राज़

जाने वालों को सदायें नहीं देता मैं
तू भी मुझ सा है की मुड कर नहीं देखा तुमने

कोई तुम्हें देखता हैं,कोई तुम्हारे ख़ाब देखता हैं
तुम्हारे शहर में, सब का हाल एक सा हैं
-मेरी कलम (शांतनु)

साथ चलना ज़रूरी है
आगे तुम चलो या मैं

हाथ थामना ज़रूरी है
तुम थाम लो या तुम्हारा मैं

दर्द बँटना ज़रूरी है
गले तुम लगायो या तुम्हें मैं

एक वक्त के बाद लौटना होता है सभी को
सारे गुजरे रास्तों,स्मृतियों और लोगों में से थोड़ा-थोड़ा
ख़ुद को समेटते हुए
वापस अपनी पूर्णता में।
हेमन्त

बहुत कुछ याद आ जाता है
तेरे याद आने से

कुछ प्रेम
मिलन के लिए नहीं होते...
वे नहीं होते
साथ चलने के लिए
वे वनवास काटते हुए
अनकहे और अनसुने रहने के लिए होते हैं
वे एक दूसरे के पूरक
होते हुए भी
अधूरे रहने के लिए होते हैं
वे मात्र यही संतोष
कर पाते हैं...
कि वे किसी के हृदय में हैं
कि वे किसी के मस्तिष्क में हैं

कि कोई उनकी
सुधियाँ बुनता है
कि कोई उनके लिए
अनायास मुस्कुराता है
या नम आँखें फेर लेता है।
कुछ प्रेम उत्सव नहीं मना पाते,
पर वे उपवास रखते हैं
और दो घूँट प्रेम उन्हें जीवित रखता है...
हरदम..........हरपल.....हमेशा...

- है उतना ही खूबसूरत मेरी कहानी में तेरा आना
  बनारस के घाट से जितना गंगा का टकराना

- अच्छी किताबें और अच्छे लोग
  तुरंत समझ नहीं आते इन्हें पढ़ना पड़ता है

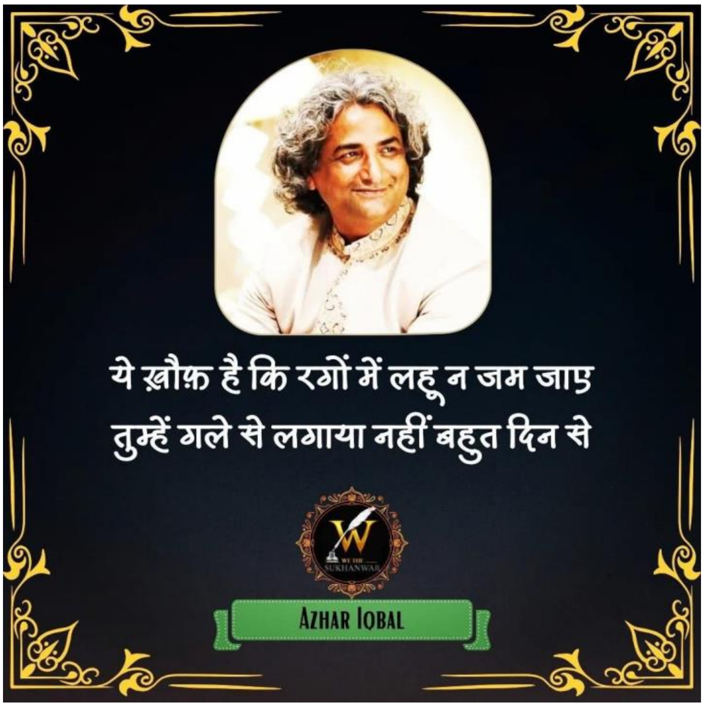

आगे आने वाला शहर
कितना भी पसंदीदा हो
पीछे छूटने वाला घर
बेचैन कर ही देता है।

मिट्टी का तन, मस्ती का मन ,
क्षण भर जीवन, इतना है मेरा परिचय
———हरिवंश राय बच्चन

मन भागता है,
तुम्हारे पीछे,
तुम ठहर क्यों नहीं जाते,
मेरे भीतर!!

नही आते हम अपनी समझ में
तो कैसे आएंगे सब की समझ में।
मैं अपने नाम की तख्ती नही हूं
कि जो आ जाए पढ़ते ही समझ में ।
लोगों को चांद और तारों की पड़ी है
हमे आती नही मिट्टी समझ में ।
वही तो दास्तां रहती है जिंदा
कि जो आती नही पूरी समझ में

साथ वही है,
जो दूर रहकर भी,
महसूस होता है.......!!

मैंने चाहा ही क्या है,
तुमसे,
तुम्हारे सिवाय....!!

करते हैं मेरी ख़ामियों का तस्करा इस तरह
लोग अपने अमार में फ़रिश्ते हों जैसे

सर्दियों का मौसम
और कोहरे का नजारा,
चाय के दो **cup**
और इंतजार तुम्हारा...

....कुछ रिश्तों की शुरुआत
में, पांव जमीन पर नहीं रहते, और अंत होता देखा है, जहां पांव त
लेजमीन नहीं रहती,,,कुछ रिश्ते किराए के मकान की तरह होते है
उन्हें कितना भी सजा लो वो अपनेनहीं हो पाते

तेवर और जेवर
संभाल के रखने की चीज है,
यूँ बात बात पे
हर किसी को दिखाए नहीं जाते !

हर आदमी में होते हैं दस बीस आदमी
जिस को भी देखना हो कई बार देखना
- निदा फ़ाज़ली

मै अब तुम्हे याद नहीं करता
तुम मुझे अब याद हो गए हो

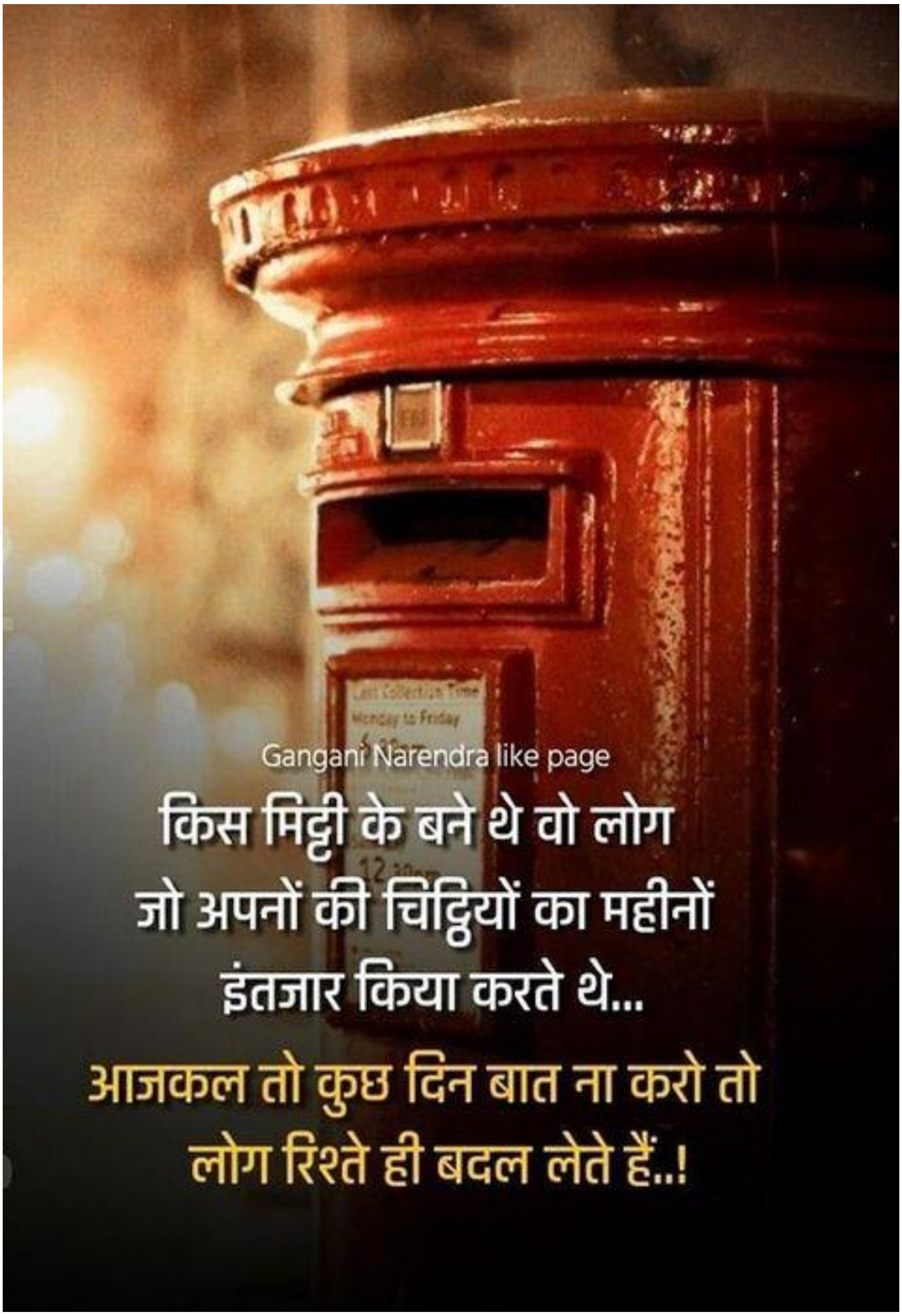
Gangani Narendra like page
किस मिट्टी के बने थे वो लोग
जो अपनों की चिट्ठियों का महीनों
इंतजार किया करते थे...
आजकल तो कुछ दिन बात ना करो तो
लोग रिश्ते ही बदल लेते हैं..!

कितना अच्छा हो
की पतंगे
रोज़ उडती रहें
आकाश में
और रोज़ बतिआता रहे
छतों पर
पडोसिओं से
ये शहर

"आदमी को चाहिए
साथ साथ रहना
सुख में दुःख में
जैसे पतंगे
उड़ रही हैं
साथ साथ/ पास पास
आकाश में
कितनी अच्छी है पतंगे
जो सिखा देती हैं
सबकों
साथ साथ हँसना
साथ साथ उड़ना"

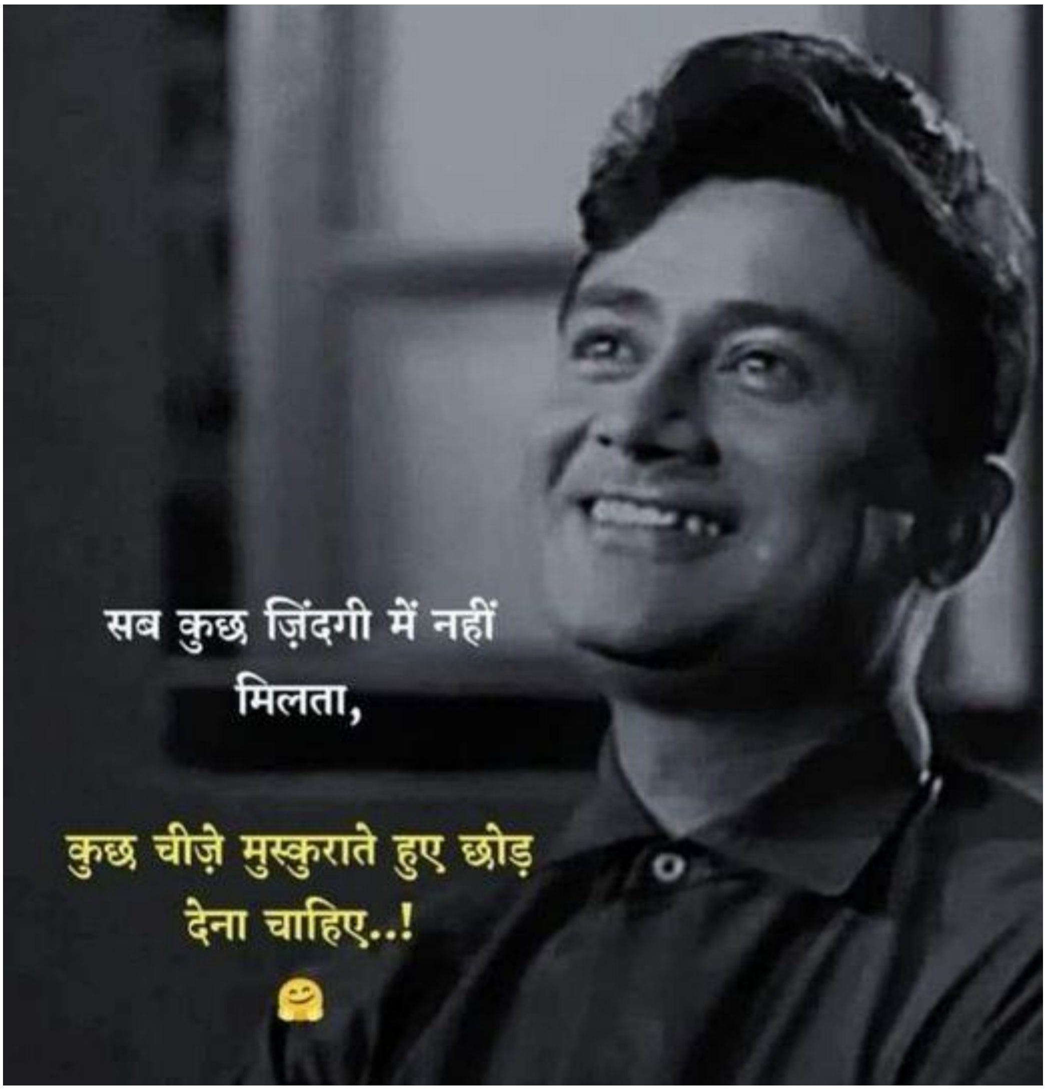
सब कुछ ज़िंदगी में नहीं
मिलता,
कुछ चीज़े मुस्कुराते हुए छोड़
देना चाहिए..!